संस्थाध्यक्षों हेतु स्वः अधिगम सामग्री

National Institute of Educational Planning and Administration (Deemed to be University)
National Centre for School Leadership

अधिगम क्षेत्र – विद्यालय नेतृत्व का दृष्टिकोण

शीर्षक

उत्तराखंड में आपदा के पश्चात विद्यार्थियों के व्यवहार में आये परिवर्तनों की चुनौती के मध्य विद्यालय प्रमुख का नेतृत्व

स्कूल लीडरशिप एकेडमी, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट) उत्तराखण्ड, देहरादून

उद्देश्य

इस मॉड्यूल के उपरान्त विद्यालय प्रमुख निम्न उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेंगे –

- किसी आपदा के पश्चात विद्यार्थियों के व्यवहार में आये परिवर्तनों की पहचान कर पाएंगे।
- विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन के कारणों का विश्लेषण कर पाएंगे।
- विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करते समय मार्गदर्शन और परामर्श उपागम की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
- एक मार्गदर्शन - प्रवृत शिक्षक के रूप में अपने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के व्यक्तिगत गुणों पर चिंतन करने में सक्षम होंगे।

शब्दावली

- आपदा
- PTSD (Post-traumatic stress disorder)
- NCF (National curriculum framework)
- NDRF (National disaster response force)
- SDRF (State disaster response force)
- DDRF (District disaster response force)
- RPWD (Rights of person with disabilities Act 2016)

प्रस्तावना

सभी क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आपदाओं के रूप में चुनौतियाँ हमारे समक्ष आती रहती हैं। हमारे आस पास से गुजरने वाली छोटी–मोटी घटनाएँ आम हैं पर ऐसी घटनाएँ जिनका असर एक बड़े समूह पर पड़ता है, उन्हें हम ज्यादातर आपदा कह कर सम्बोधित करते हैं। आपदा एक प्राकृतिक या मानव निर्मित जोखिम का प्रभाव है जो समाज या पर्यावरण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदा के उदाहरण -

मानव निर्मित आपदाएं	
भोपाल गैस त्रासदी	1984 में होने वाली इस घटना में लगभग 12000 की जान गई थी और 5 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हुए।
इलाहाबाद कुम्भ मेले में हुई भगदड़	1954 में इलाहाबाद कुम्भ मेले में हुई भगदड़ के दौरान लगभग 800 लोगों की जान गयी और अनेक लोग घायल हो गए।

प्राकृतिक आपदाएं	
गुजरात भूकंप	26 जनवरी, 2001 में आये गुजरात भूकंप में 12000 लोगों की जान गयी और लगभग एक लाख लोग बेघर हो गए । source - https://www.bbc.com/hindi/regionalnews/story/2004/01/040126_bhuj_threeyears
केदारनाथ आपदा	2013 में आयी केदारनाथ आपदा मे 5700 से ज्यादा लोगों की जान गई और हजारों लोग लापता हो गए ।

प्राकृतिक विपत्तियां जो मानव जीवन को बुरी तरह प्रभावित करती है, इन आपदाओं में मुख्य रूप से बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, सुनामी, ज्वालामुखी, अकाल, सूखा, हिमस्खलन, आंधी, तूफान, चक्रवात, आदि शामिल है।

उत्तराखंड के परिप्रेक्ष्य में देखें तो इसकी भौगोलिक संरचना के कारण भूस्खलन, हिमस्खलन, अतिवृष्टि, बादल फटना, आंधी, तूफान, वनाग्नि जैसी आपदाएं आती रहती हैं।

उत्तराखंड में हुई प्रमुख आपदाएं –

3 जून 1980	भूस्खलन ज्ञानसू (उत्तरकाशी)
1991 – 1992	भूस्खलन पिंडर घाटी (चमोली)
11 अगस्त 1998	भूस्खलन उखीमठ (रुद्रप्रयाग)
10 अगस्त 2002	भूस्खलन बूढ़ाकेदार (टिहरी)
17 अगस्त 1998	भूस्खलन मालपा (पिथौरागढ़)
02 अगस्त 2004	टनल धंसना टिहरी बांध (टिहरी)
17 अगस्त 2010	भूस्खलन कपकोट (बागेश्वर)
07 अगस्त 2009	अतिवृष्टि मुनस्यारी (पिथौरागढ़)
16 जून 2013	केदारनाथ अलकनंदा नदी में आपदा (रुद्रप्रयाग)

अक्सर हम आपदाओं को जान और माल के नुकसान से तोलते हैं क्योंकि इन आपदाओं में जान और माल का भारी नुकसान होता है, परन्तु ये जानना भी जरुरी है कि इन आपदाओं में बचे लोगों का जीवन कई प्रकार से चुनौतीपूर्ण हो जाता है। एक तरफ अपनो को खो देने का दुःख और दूसरी तरफ आगे की जिंदगी के लिए संरक्षण और साधनों का अभाव। आपदा पीड़ित लोग सामाजिक, आर्थिक, संवेगात्मक और मनोवैज्ञानिक रूप से भी आहत हो जाते हैं। स्कूली बच्चे भी इस से अछूते नहीं रहते और आपदा के कारण उनके व्यवहार में आये परिवर्तन उनके सीखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।

पृष्ठभूमि

बचपन एक इंसान के वजूद और आकार की बुनियाद होता है, साथ ही बचपन में सही परवरिश और शिक्षा ही उसके भविष्य का रास्ता तय करने में अहम भूमिका निभाते हैं। लेकिन क्या किया जाए जब प्राकृतिक आपदाओं या अभी हम विगत वर्षों में कोविड –19 जैसी महामारी की ही बात भी कर सकते हैं, जिसके कारण करोड़ों बच्चों का बचपन और उनका भविष्य दांव पर लग गया।

रिपोर्ट

2013 में आयी केदारनाथ आपदा को एक Survey Report के जरिये समझा जा सकता है, यह Survey "ActionAid Association" नामक एक सामाजिक संस्था के द्वारा कराया गया।

उत्तराखंड में स्थित केदारनाथ मंदिर एक बड़ी आस्था का केंद्र होने के अलावा आसपास रहने वाले परिवारों के जीवन यापन के लिए काम काज और व्यापार का केंद्र भी है। आपदा के दौरान भूस्खलन और बाढ़ से जान गंवाने वाले लोगों में तीर्थ यात्रियों के अलावा एक बड़ी संख्या स्थानीय लोगों की भी थी। स्थानीय लोगों का जीवन यापन तीर्थ यात्रा पर ही निर्भर था, आपदा के बाद यात्रा का बंद होना और बहाल होने पर भी यात्रा में भारी कमी के चलते उन्हें आर्थिक दिक्कतों का सामना भी करना पड़ रहा है।

आपके विचार में-

- *आपदाओं के बाद आस – पास का जीवन और शिक्षा किस प्रकार प्रभावित हो सकती है?*
- *आपदा के दौरान अपने माता–पिता, भाई–बहन, मित्र या किसी सगे–सम्बन्धी को खोने पर किसी बच्चे की मनोस्थिति कैसी होगी और ऐसे बच्चे के व्यवहार में क्या बदलाव देखे जा सकते हैं?*
- *केदारनाथ आपदा प्रभावित क्षेत्रों के आस – पास स्कूल आने वाले बच्चों में किस प्रकार के व्यवहारिक परिवर्तन देखे गए होंगे?*

❖ आपदा के बाद विभिन्न स्तरों पर बातचीत के दौरान स्कूली बच्चों के सन्दर्भ में निम्नलिखित कुछ बिंदु उजागर हुए-

- स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या में कमी
  कारण – परिजन का निधन, घर को नुकसान, आर्थिक संकट आदि।
- स्कूल आने वाले बच्चों में दहशत

कारण – अपने सामने हादसे से होने वाले लोगों की मौत, किसी प्रिय को खो देना, आर्थिक नुकसान आदि।

- हल्की बारिश वाले दिनों में स्कूल आने वाले बच्चों की संख्या में भारी कमी
  कारण – दुबारा हादसे की आशंका के कारणों से डर।
- रोजगार के अभाव में आर्थिक संकट के चलते बच्चों से बालमजदूरी
  कारण – घर में कामकाजी व्यक्ति का निधन या रोजगार का पतन।

आपदा के बाद जीवन काफी कठिन हो जाता है जैसे, खुद का घर बह जाना, सारे सामान और दस्तावेज ख़त्म हो जाना आदि। ऐसी आपदाओं में पीड़ित बच्चों का जीवन अत्यधिक प्रभावित होता है, बच्चों के कोमल हृदय पर ऐसी घटनाओं का कई प्रकार से असर होता है जिन्हे हम उनके व्यवहार में आये परिवर्तनों से परिलक्षित कर सकते हैं।

आपदा के दौरान अपने माता, पिता, भाई, बहन, मित्र या किसी सगे सम्बन्धी को खो देने से बच्चों के मन में कई प्रकार के डर घर कर लेते हैं जैसे -

- भविष्य में अपने किसी खास को खो देने का डर।
- भविष्य में किसी अन्य आपदा में अपनी स्वयं की जान का भय।
- आपदा को करीब से देखने के कारण भय।
- अपने अभिभावक के निधन से अपनी असुरक्षा की भावना।
- भविष्य में आर्थिक और सामाजिक जरूरतों के लिए साधनों का अभाव।
- उपरोक्त समस्याओं के कारण जीवन के प्रति निराशा।
- आर्थिक तंगी के कारण हीन भावना।
- आर्थिक तंगी के कारण असामाजिक तरीकों से धन अर्जित करने का प्रयास, चोरी की आदत और अपराधों की ओर उन्मुख होना आदि।

❖ संभावित मानसिक और सामाजिक परिस्थितियाँ –

- छोटी उम्र के बच्चों में अभिभावकों से अलगाव के कारण मानसिक सदमा
- अभिभावकों की अनुपस्थिति के कारण डर और असुरक्षा की भावना
- अभिभावकों पर निर्भरता के कारण रोजमर्रा के कार्यों और साधनों की व्यवस्था के लिए चिंता
- आर्थिक साधनों का अभाव
- अपनी समस्या साझा करने के लिए विश्वसनीय व्यक्ति का अभाव

❖ उपरोक्त परिस्थितियों के कारण संभावित आचरण में बदलाव –

- दैनिक कार्यों में अरुचि
- पढ़ाई में अरुचि
- सामाजिक संबंधों में कमी
- हीन भावना का उत्पन्न होना
- आत्मविश्वास में कमी
- साधनों के अभाव के कारण क्रोधी स्वभाव
- मानसिक दबाव के कारण नशे की आदत
- आर्थिक निर्भरता के लिए असामाजिक कार्यों में रुझान

ऐसी आपदाओं से बचाव के लिए राष्ट्रीय स्तर पर National Disaster Response Force (NDRF) राज्य स्तर पर State Disaster Response Force (SDRF) जिले स्तर पर District Disaster Response Force (DDRF) और स्कूल स्तर पर School Disaster Management Committee (SDMC) गठित किया जाता है।

राष्ट्रीय आपदा मोचन बल और नागरिक सुरक्षा (NDRF) आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के तहत खतरनाक आपदा स्थिति या आपदा के लिए विशेष प्रतिक्रिया के उद्देश्य के लिए गठित एक भरतीय विशेष बल है।

भारत में आपदाओं के प्रबंधन की जिम्मेदारी राज्य सरकार की होती हैं, इसलिए राज्य स्तर पर राज्य आपदा मोचन बल और नागरिक सुरक्षा (SDRF) होता है। कोविड –19 के कारण विश्व ने एक नई महामारी या आपदा का सामना किया है इस आपदा को मानव इतिहास में अब तक की सबसे बड़ी आपदा मानी जा सकती है। इस बीमारी ने लगभग 26 करोड़ लोगों को अपनी चपेट में लिया जिससे लगभग 52 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हुई, भारत में भी अब तक लगभग 6 लाख लोग इस बीमारी के चलते अपनी जान गँवा बैठे हैं।

इस आपदा के चलते विश्व स्तर पर मानव जीवन शैली पर कई बड़े बदलाव आये हैं जिनका रोजमर्रा के जीवन पर गहरा असर हुआ है। कोविड –19 की इस बीमारी से बचाव के मुख्य साधन हैं –

- मास्क लगाना
- बार बार हाथ साफ करना
- सामाजिक दूरी

आज तक हजारों साल पुराना मानव समाज सामाजिक मेल जोल पर निर्भर रहा है। अचानक इस बीमारी के चलते लोगों के सामाजिक मेल जोल पर असर हुआ है ।लॉकडाउन के कारण लोगों को घर पर ही रहना पड़ा, जिसका गहरा असर बच्चों और वृद्धों पर भी पड़ा। संक्रमण के बचाव के कारण सामाजिक दूरी के पालन हेतु बच्चों का अपने मित्रों से मिलना और उनके साथ खेलना बंद हो गया है जिसके चलते बच्चों को अलग–अलग रहना पड़ा इसका परिणाम बच्चों के व्यवहार में परिलक्षित हुआ है।

केस स्टडी - 1 आपदा

नौ साल की रानी राजपूत उत्तराखंड के एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में पढ़ंती है। उसकी माँ राधा राजपूत ने बताया कि विगत कुछ वर्ष पहले, लॉकडाउन के दौरान स्कूल में लम्बा अवकाश पड़ने पर उनकी बेटी घर पर खाली रही। राधा कहती हैं, हम तभी काम की तलाश में यूपी से उत्तराखंड आए थे। मेरे पति ऑटो रिक्शा चलाते हैं और मैं लोगों के घर पर घरेलू कामकाज करती हूँ। उन दिनों हमें पता चला है कि बड़े स्कूल कंप्यूटर पर कक्षाएँ ले रहे हैं। लेकिन हमारे पास तो स्मार्टफ़ोन तक नहीं था। यदि स्कूल अब भी किसी आपदा के दौरान ऐसे ही बंद हुए तो, स्कूल के बंद होने के बाद हमें सूचना प्राप्त करने का कोई जरिया नहीं होगा। मेरी बेटी फिर से एक कमरे के घर में सारा दिन रहते–रहते परेशान हो जाया करेगी।

आपके विचार में –

- *"मेरी बेटी एक कमरे के घर में सारा दिन रहते – रहते परेशान होगी " इस कथन से राधा राजपूत का क्या तात्पर्य है?*
- *ऐसी आपदा में अधिगम–शिक्षण की प्रक्रिया हेतु आप किस प्रकार से तैयार हैं?*
- *रानी राजपूत जैसे ग़रीब या निम्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की पढ़ाई पर आपदाओं का क्या प्रभाव पड़ता होगा?*
- *जब रानी राजपूत लॉकडाउन के बाद विद्यालय आने पर आपने उनके व्यवहार में क्या परिवर्तन अनुभव किए ?*

केस स्टडी –2 आपदा या महामारी कुछ और पहलू

हम सभी जानते हैं कि कोविड –19 महामारी के कारण लॉकडाउन में परिवार के सभी सदस्यों को साथ रहने का मौका मिला, जिससे सभी बहुत खुश थे खासकर बच्चे। ऐसा ही एक परिवार था रवि का। रवि के पिता काम के कारण अपने परिवार को समय नहीं दे पाते थे, पर अब रवि बहुत खुश था क्योंकि उसके पिता दिन भर उसके साथ खेलते और बातें करते थे। रवि का स्वभाव खुशमिजाज और चंचल था। लॉकडाउन खुलने पर रवि के पिता ऑफिस जाने लगे और रवि ऑनलाइन पढ़ाई करने लगा। सब ठीक चल रहा था।

एक शाम जब रवि के पिता ऑफिस से लौटे तो उन्हें तेज बुखार था और बदन भी दर्द कर रहा था। डॉक्टर के कहने पर जब उन्होंने कोरोना टेस्ट कराया तो उनकी रिपोर्ट पॉजिटिव आई। स्वास्थ्य कार्यकर्ता उन्हें घर से अस्पताल ले गए और घर के सभी सदस्यों को अलग - अलग जगह क्वारंटीन (quarantine) कर दिया गया। अस्पताल में भी रवि के पिता के स्वास्थ्य में लाभ नहीं हुआ उधर घर पर भी सब अलग - अलग कमरों में अकेले समय व्यतीत करने लगे जिससे रवि उदास हो गया। सारा दिन बंद कमरे में रवि को घबराहट होती थी। समय व्यतीत करने के लिए न कोई खेल और ना ही कोई साथी। जैसे तैसे क्वारंटीन के 14 दिन पूरे हुए परंतु रवि के पिता की कोरोना के कारण मृत्यु हो गई। रवि न तो उनसे कोई बात कर पाया और ना ही उनसे मिल पाया। इस घटना ने रवि के दिमाग पर गहरा आघात किया। रवि अकेला और गुमसुम रहने लगा। रवि के घर पर उसके पिता ही एकमात्र कमाने वाले थे। रवि के परिवार में दादा–दादी, माँ, और बहन कुल 5 सदस्य थे। उसकी माँ, को हर समय घर चलाने की चिंता रहती थी। इसी कारण रवि की माँ, ने मजदूरी करना शुरू कर दिया। इसका असर रवि पर भी पड़ा।

आपके विचार में –

- *लॉकडाउन के दिनों में रवि के प्रसन्न रहने के क्या कारण रहे?*
- *कोविड -19 के दौरान क्वारंटीन रहने के कारण रवि की मानसिक दशा क्या रही होगी?*
- *महामारी में पिता की मृत्यु ने रवि को व्यवहारिक और मानसिक रूप से किस प्रकार प्रभावित किया होगा?*
- *क्या रवि ऐसे सदमें से के उपरान्त सामान्य मनःस्थिति प्राप्त कर सकता है?*
- *किसी महामारी या प्राकृतिक आपदा के समाप्त होने पर बच्चे किस प्रकार की समस्याओं का सामना कर सकते है। ?*
- *महामारी के समाप्त होने के बाद रवि जैसे विद्यार्थी विद्यालय नही आये होंगे, ऐसे विद्यार्थियों को विद्यालय आने के लिए आपके द्वारा क्या रणनीति बनाई जा सकती है?*
- *पारिवारिक और आर्थिक क्षति के बाद रवि किसी तरह विद्यालय आने को तैयार हुआ, उसकी विद्यालय में नियमितता बनी रहे उसके लिए आप क्या कदम उठायेंगे?*
- *शैक्षिक उपलब्धि स्तर में परिवर्तन के क्या क्या संभावित कारण हो सकते है?*
- *अधिगम स्तर में वृद्धि करने के लिए आपने क्या–क्या रणनीति बनायीं?*
- *रवि जैसे विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि हेतु विद्यालय प्रबंधन क्या–क्या गतिविधियाँ कर सकता हैं?*

संक्षेपण

किसी महामारी में जान गंवाने वाले परिवारों के बच्चों पर इसका असर ज्यादा गहरा होता है। जैसे विद्यालय खुलने पर अधिकतम शिक्षकों ने ये अनुभव किया कि प्रभावित बच्चों में सामाजिक बदलाव के साथ–साथ मानसिक बदलाव भी दृष्टिगोचर हुए। महामारी के दौरान विद्यालय लम्बे समय तक बंद रहे और शिक्षा का कार्य इन्टरनेट के माध्यम से जारी रखा गया। परन्तु साधन –सम्पन्न न होने के कारण राजकीय विद्यालय के विद्यार्थी बहुत कम संख्या में ही इस सुविधा का लाभ उठा पाये। स्मार्ट फोन की उपलब्धता न होने के कारण एवं आर्थिक तंगी के कारण बहुत से विद्यार्थी चाहते हुए भी ऑनलाइन कक्षा का लाभ नहीं उठा पाए। उपरोक्त से यह बात स्पष्ट है कि शिक्षक, विद्यालय, समाज एवं सरकार की जिम्मेदारी अधिक हो जाती है कि रवि जैसा कोई बच्चा संसाधनों के अभाव में सीखने जैसे पुनीत कार्य से बिवरत न हो पाये।

ऐसी ही मनःस्थिति से गुजरते हुए एक छात्र की व्यथा –

कोविड–19 आपदा के समय ऑनलाइन शिक्षण के दौरान स्मार्ट फोन की उपलब्धता एवं अन्य सुविधाएँ, न होने के कारण एक छात्र की चिट्ठी अपनी शिक्षिका के नाम -

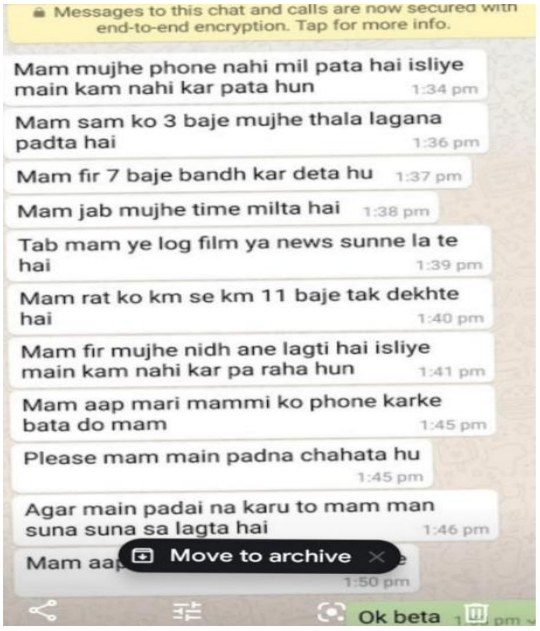

UNICEF द्वारा प्राप्त सितम्बर 2020 में 188 देशों के आँकड़ों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में चार में से मात्र एक ही बच्चा ऑनलाइन कक्षाओं का लाभ प्राप्त कर पा रहा है।

https://data.unicef.org/topic/education/covid-19/

अजीम प्रेमजी युनिवर्सिटी के द्वारा भारत के कुछ राज्यों में कराए गए एक फील्ड स्टडी के अनुसार 30,511 विद्यार्थी जो सतत रूप से कक्षा में रहते थे, अब मात्र 11,474 विद्यार्थी ही ऑनलाइन कक्षा का लाभ उठा पा रहें हैं अर्थात लगभग 60 % विद्यार्थीयों की ऑनलाइन लर्निंग सुविधा तक पहुँच भी नही बन पा रही हैं ।

https://azimpremjiuniversity.edu.in/field-studies-in-education/myths-of-online-education

इसी क्रम में उत्तराखण्ड राज्य के निम्न आँकड़ें बताते हैं कि पूरे प्रदेश में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में मात्र 88,948 विद्यार्थी ही ऑनलाइन शिक्षण प्राप्त कर पा रहे थे –

उच्च प्राथमिक स्तर (माह नवम्बर 2020)

जनपद	कितने विद्यालयों में ऑनलाइन शिक्षण हो रहा है	कितने छात्र ऑनलाइन शिक्षण में प्रतिभाग कर रहे हैं	कितने छात्र टी.वी./रेडियो का शिक्षण में प्रयोग कर रहे हैं	कितने छात्रों को शिक्षकों द्वारा वर्कशीट प्रदान की जा रही है
अल्मोड़ा	180	8076	2636	2769
उत्तरकाशी	178	3596	342	2161
उधमसिंह नगर	178	11413	2571	18295
चमोली	167	9543	3646	3893
चम्पावत	92	3702	977	1060
टिहरी	201	8232	3860	4807
देहरादून	251	7960	2472	4600
नैनीताल	205	5875	964	11477
पिथौरागढ़	208	5551	3103	2750
पौड़ी	257	8425	3698	1701
बागेश्वर	55	1239	1286	592
हरिद्वार	119	9273	1463	1364
रूद्रप्रयाग	454	6063	1542	316
योग	**2545**	**88948**	**28560**	**55785**

उत्तराखण्ड के जिले हरिद्वार पर एक नजर -

हरिद्वार जिले में मुख्य शिक्षा अधिकारी CEO कार्यालय द्वारा कराए गए सर्वे के अनुसार प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 2021 में पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या लगभग 1,2,1125 बताई गई जिनमे से मात्र 18 % (21,802) विद्यार्थी ही ऑनलाइन कक्षा का लाभ उठा पा रहे थे और शेष बच्चों में से कुछ टेलीविजन/रेडियो के माध्यम से पढ़ाई कर रहें थे एवं कुछ वर्कशीट के माध्यम से कर रहे थे।

इन आंकड़ों को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि बहुत बड़ी संख्या उन विद्यार्थियों की रही जो किसी भी माध्यम से पढ़ाई नही कर पाए और अगली कक्षा में प्रोन्नत कर दिए गए । इस प्रकार विद्यालय खुलने के बाद ये भी एक बहुत बड़ा कारण रहा, बच्चों के व्यवहार में आये परिवर्तनों का।

कोरोना काल के बाद स्कूल खुलने पर बच्चों के व्यवहार में निम्न लक्षण देखे गए जो पहले उनके व्यवहार का हिस्सा नहीं थे –

- भावनात्मक रूप से कमजोर, डरे, सहमे व असहज बच्चे

- अनुशासनहीनता
- साझा करने की प्रकृति में कमी
- सीमित दायरे में रहने की प्रवृत्ति
- मित्रता में असहजता
- पढ़ाई के प्रति रुझान में कमी
- घर जाने की जल्दी
- सीखने की प्रवृत्ति में कमी
- मध्यान भोजन में अरुचि
- एकांत प्रियता
- खेल के प्रति रुझान में कमी

गतिविधि –

विद्यालय प्रमुख के रूप में आपदा प्रभावित विद्यार्थियों के लिए आप एक योजना का निर्माण कीजिए -

इस योजना के उद्देश्य होने चाहिए –

- विद्यार्थियों का शारीरिक स्वास्थ्य उन्नयन
- विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उन्नयन
- विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि उन्नयन
- विद्यार्थियों का सामाजिक व सांवेगिक स्वास्थ्य उन्नयन

बच्चों का स्कूली जीवन उनके सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, प्रायः यह माना जाता है कि बच्चों को उनके बौद्धिक स्तर में वृद्धि के लिए स्कूल भेजा जाना चाहिए, परन्तु विशेषज्ञों के अनुसार बच्चों के सामाजिक, नैतिक, और सांस्कृतिक विकास में भी विद्यालय की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, अतः आपदा के पश्चात् बच्चों के व्यवहार में आये बदलाव से यह स्पष्ट हो जाता है कि विद्यालयों में शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव करना अत्यंत आवश्यक है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भारतीय समाज को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के लक्ष्यों को वर्णित किया गया है जैसे –

- ज्ञान और दुनिया की समझ के साथ दूसरों की भावनाओं व कल्याण के प्रति संवेदनशीलता।
- नई परिस्थितियों के प्रति लचीले और रचनात्मक तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त करने की महत्वपूर्ण प्रक्रिया पर जोर डालने की आवश्यकता।
- शिक्षा का उद्देश्य समाज में आने वाली नई चुनौतियों के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना और चुनौतियों के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण स्थापित करना।
- हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना विद्यालय का एक प्रमुख उदेश्य है। आपदा के बाद बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन को पहचानना और उसके अनुरूप उनके लिए व्यवस्था बनाना विद्यालय प्रमुख का दायित्व है।
- NEP 2020 (National Education Policy) के अनुसार भी छात्र की परिस्थिति एवं क्षमता अनुरूप शिक्षण व्यवस्था में लचीलापन (Flexibility) आवश्यक है।

किसी भी आपदा के बाद वयस्कों तथा बच्चों में कुछ मनोवैज्ञानिक परिवर्तन आते हैं। मनोविज्ञान की भाषा में इसे अभिघातज़ उत्तर दबाव विकार PTSD (Post Traumatic Stress Disorder) कहा जाता है, यह एक मानसिक विकार है जो किसी भी भयानक घटना से उत्पन्न होता है जिसे व्यक्ति ने खुद अनुभव किया होता हो या करीब से देखा होता हो।

❖ अभिघातज़ उत्तर दबाव विकार के लक्षणों में–

- घटना का बार–बार ध्यान में आना (flash back)
- घटना से जुड़े सपने आना
- गहरी चिंता (high anxiety level)
- घटना के बारे में लगातार विचार का आते रहना
- इस विकार से पीड़ित होने पर व्यक्ति चिड़चिड़ा हो जाता है
- उसकी एकाग्रता की क्षमता कम हो जाती है जिससे सामान्य कार्य करने में परेशानी होती है
- समाज में घुलने मिलने में दिक्कत होती है और व्यक्ति सामाजिक दायरों से कटने लगता है
- बदली हुई स्थितियों में व्यक्ति खुद को नुकसान पहुँचाने की भी कोशिश कर सकता है ताकि वो घटना और उनकी यादों से छुटकारा पा सके
- दुर्भिति (phobia) & PTSD के कारण व्यक्ति घटना से जुडी किसी भी चीज या स्थिति से डरने लगता है

  उदाहरण - कार दुर्घटना से गुजरने वाला व्यक्ति ठीक होने पर भी कार ड्राइव नहीं कर पाता है।

संभावित समाधान –

आपदा से प्रभावित बच्चों में व्यवहार सम्बंधित परिवर्तनों के लिए विद्यालय स्तर पर निम्न प्रयास किये जा सकते हैं:

- ऐसी स्थिति में बच्चों में डर की भावना सबसे अधिक होती है, बच्चे अपने मन की बात एक स्नेहपूर्ण, विनम्र, व्यवहार कुशल और मधुरभाषी अध्यापक से ही कर सकते हैं। प्रधानाध्यापक स्कूली स्तर पर एक Student Relationship Officer (SRO) को नियुक्त कर सकते हैं। SRO नियुक्ति के लिए अध्यापक का चयन एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। एक ऐसा अध्यापक SRO नियुक्त कर सकते हैं जो बच्चों को सबसे ज्यादा प्रिय हो और जिसके सम्बन्ध बच्चों से मित्रतापूर्ण हों । इसके लिए बच्चों से सहमति ली जाये या मतदान भी कराया जा सकता है।
- बच्चों को ये बताया जाना चाहिए कि अपनी किसी भी प्रकार की समस्या को वह SRO से साझा कर सकते हैं।
- सकारात्मक वातावरण –

– बच्चों के भय को पहचान कर उन्हें सुरक्षित महसूस कराना

– विद्यालय और कक्षा कक्ष के वातावरण को आनंदमयी बनाना

– बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने का माहौल प्रदान करना

– सामूहिक कार्यों (समूह में कार्य) को बढ़ावा देना

– बच्चों के बीच तुलनात्मक व्यवहार से बचाव

– इन बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यचर्या और सीखने के परिवेश में बदलाव करना

– इन छात्रों के आकलन के सफल समापन के लिए उपयुक्त विधि और अतिरिक्त समय का निर्धारण करना

– अधिगम प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करें और और अन्य बच्चों की तरह प्रगति करने में मदद करें

– आनंदम की गतिविधि के लिए इन छात्रों का एक समूह बना कर समय सीमा को बढ़ाया जा सकता है

संवेदनशीलता –

- बच्चों की counselling की व्यवस्था करना
- बच्चों से हमेशा निगाह मिलाकर बात करना
- सकारात्मक भाषा का प्रयोग करना जैसे,
    - आप कर सकते हैं
    - आप और अच्छा कर सकते हैं
    - आप सही हैं

- अन्य सहपाठी ऐसे बच्चों की भावना का सम्मान करें
- बच्चों की बातों को ध्यान से सुनना
- बच्चों की बातों को ध्यान से सुनना
- अन्य सहपाठी ऐसे बच्चों की भावना का सम्मान करें
- कक्षा के अन्य छात्र इन छात्रों के प्रति सवेदनशील हों
- बच्चों को नाम से पुकारें

विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का सम्मान –

- विद्यालय में सभी शिक्षकों और छात्रों का इन बच्चों के प्रति सकारात्मक व्यवहार हो
- बच्चों की बातों को ध्यान से सुनना
- अन्य सहपाठी ऐसे बच्चों की भावना का सम्मान करें

जैसे विद्यालय में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए व्यवस्था की जाती है उसी प्रकार इन बच्चों के लिए भी व्यवस्थाएं की जा सकती हैं। आपदा ग्रस्त बच्चों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की श्रेणी में लेना चाहिए अतः समावेशी शिक्षा के अनुसार इनके लिए भी विशेष व्यवस्था की जानी चाहिए।

विकलांगजन अधिनियम 2016 RPWD (rights of persons with disabilities Act - 2016) के अनुसार समावेशी शिक्षा का अर्थ शिक्षा की एक ऐसी प्रणाली से है जिससे सामान्य और विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं और शिक्षण अधिगम व्यवस्था को विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की विभिन्न प्रकार की शिक्षण–अधिगम की जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयुक्त रूप से अनुकूलित किया जाता है।

Uttarakhand Helpline Numbers	
Uttarakhand Corona (COVID-19) Helpline	104, 0135-2710334, 6398500541
Child Helpline	1098
Disaster / Medical helpline	108
State District Management Authority	0135 2710334
Uttarakhand State Disaster Management Website	www.usdma.uk.gov.in

- **स्कूल की एक दीवार पर निम्न जानकारी उपलब्ध कराई जानी चाहिए –**

सामान्य परिस्थितियों में उत्तराखंड शिक्षा विभाग द्वारा संचालित **'बाल सखा'** कार्यक्रम का प्रभावी संचालन किया जाना चाहिये। इस कार्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों में जीवन कौशलों का विकास किया जा सकता है जिससे विद्यार्थी का व्यक्तित्व प्रत्येक परिस्थिति में संतुलित व प्रभावी रहेगा।

उदाहरण के लिए ये जीवन कौशल है –

- आग्रहिता (Assertiveness)
- असहायक आदतों से छुटकारा (जैसे – काम को टालना)
- समय प्रबंधन
- विवेकपूर्ण चिंतन
- स्वस्थ सामाजिक सम्बंध बनाना आदि

समेकन –शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में ज्ञान का संचार करना ही नहीं अपितु उनको जीवन में आने वाली चुनौतियों से अवगत कराना और भविष्य के लिए उन्हें तैयार करना भी है। विभिन्न आपदाओं से ग्रसित बच्चों को असामान्य परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है जिस कारण उनकी मनोस्थिति सामान्य बच्चों से अलग होती हैं। ऐसे बच्चों की व्यवहारिक गतिविधियां असामान्य हो सकती है। विद्यालय नेतृत्व का यह कर्तव्य है कि ऐसे बच्चों की पहचान करे, और सभी अध्यापकों को बच्चे की परिस्थितियों से अवगत करायें। सुनिश्चित करें कि सभी शिक्षक एवं अन्य विद्यार्थी ऐसे बच्चों से विनम्रता का बर्ताव करे। जरुरत महसूस होने पर परामर्शदाता/मनोवैज्ञानिक (Counsellor) की व्यवस्था करे और सलाह अनुसार आपदा ग्रस्त बच्चों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की श्रेणी में लेना चाहिए तथा समावेशी शिक्षा के अनुसार इनके लिए भी विशेष व्यवस्था की जानी चाहिए।

महात्मा गांधी– "शिक्षा से मेरा का तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।"

सन्दर्भ सूची:

1. अरुण कुमार सिंह, आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान 2001, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
2. जॉर्ज जी० थोमसन, चाइल्ड साइकोलॉजी ग्रोथ ट्रेंड्स इन साइकोलॉजिकल एडजेस्टमेंट 1981, सुरजीत पब्लिकेशन, दिल्ली
3. .नई शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
4. मनोविज्ञान, कक्षा 12, (NCERT) पाठ्यपुस्तक 2019, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) नई दिल्ली
5. रत्नमाला (अंक – 2) अकादमिक, शोध एवं प्रशिक्षण निदेशालय, उत्तराखण्ड

वेबलिंक्स:

- https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/list-of-major-natural-disasters-in-the-history-of-india-1590147440-1
- https://www.actionaidindia.org/blog/joshimath-children-worst-affected-in-uttarakhand/amp/
- https://www.mapsofindia.com/my-india/india/5-worst-man-made-disasters-in-india
- https://en.wikipedia.org/wiki/National_Curriculum_Framework_(NCF_2005)
- http://www.usdma.uk.gov.in/
- https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
- https://nidm.gov.in/pdf/pubs/ukd-p1.pdf
- https://www.studyfry.com/natural-disasters-in-uttarakhand
- https://data.unicef.org/topic/education/covid-19/
- https://who.int/data
- https://resourcecentre.savethechildren.net/pdf/sci-eng_sdm_handbook.pdf/
- https://en.wikipedia.org/wiki/National_Disaster_Response_Force